रोबर्टा बोन्डर

अन्तरिक्ष यात्री

रोबर्टा बोन्डर
अन्तरिक्ष यात्री

4 दिसम्बर 1945 को जब रोबर्टा लिन बोन्डर का जन्म हुआ तब तक कोई भी इंसान अन्तरिक्ष में नहीं गया था. रोबर्टा, ऑंटारियो, में बड़ी हुई. बचपन से ही उसकी विज्ञान में बहुत गहरी रूचि थी. परिवार ने बचपन में उसे एक कैमिस्ट्री की विज्ञान-किट भेंट की थी. उसके बाद सात साल की उम्र से रोबर्टा अपने घर के तहखाने में पिताजी द्वारा बनाई लेबोरेटरी में प्रयोग करने लगीं.

वहां रोबर्टा, प्लास्टिक के "मॉडल राकेट" बनाती थी. उसकी रूचि साइंस फिक्शन में भी थी. वो ऐसा नाटक करती थी जैसे वो रेडियो प्रोग्राम "फ़्लैश गॉर्डोन" की सदस्य हो और उसका राकेट मंगल गृह की तरफ जा रहा हो. "जब मैं आठ साल की थी," उसने याद करते हुए कहा, "तब कोई भी इंसान अन्तरिक्ष यात्री बनने से बड़ी कोई इच्छा नहीं कर सकता था."

उसने अपनी बड़ी बहन बारबरा के साथ अन्तरिक्ष यात्री का नाटक खेलते-खेलते पड़ोस का चप्पा-चप्पा छान मारा था. उसके परिवार का लेक सुपीरियर के पास एक घर था. रात में वो घर के ऊपर टेली-कम्यूनिकेशन सॅटॅलाइट "इको-1" को गुज़रते हुए देखती थी. रोबर्टा भी कभी वहां अन्तरिक्ष में होने का सपने देखती थी.

"मुझे हमेशा लगता था कि पक्षी मुझ से बेहतर थे," उसने कहा. "वो आसमान में बहुत ऊंचे उड़कर दूर से पृथ्वी को निहार सकते हैं. इसलिए उड़ने की इच्छा मुझ में बड़े प्राकृतिक रूप से पैदा हुई." रोबर्टा में गर्ल-गाइड बनने की रूचि उतनी ही प्रबल थी जितनी उसकी इच्छा गणित और विज्ञान के विषयों में थी.

गर्ल गाइड बारबरा और रोबर्टा

उसने हाई स्कूल की पढ़ाई सर जेम्स डन कॉलेजिएट और वोकेशनल स्कूल में की. उसके बाद वो यूनिवर्सिटी ऑफ़ गुएल्फ और यूनिवर्सिटी ऑफ़ वेस्टर्न ओंटारियो, लन्दन में उच्च शिक्षा के लिए गई. अंत में उसने यूनिवर्सिटी ऑफ़ टोरंटो से डॉक्टरेट की उपाधि हासिल की. ज्ञान की पिपासा उसे कनाडा और अमेरिका के मेडिकल स्कूल्स में ले गई. अंत में वो एक न्यूरो-ओप्थाल्मोलोगिस्ट बनी – यानि ऐसी डॉक्टर जिसकी विशेषता आँखें कैसे काम करती हैं यह समझने में थी.

ट्रेनिंग के दौरान रोबर्टा बोन्डर एक पैराशूट से लटकी हुई.

1983 में डॉ. रोबर्टा बोन्डर ने तभी नए बने कैनेडियन एस्ट्रोनॉट प्रोग्राम में अपनी अर्जी भेजी. उसी दिसम्बर में उसका चयन हुआ और फिर पांच अन्य कैनेडियन लोगों के साथ उसे ट्रेनिंग के लिए NASA भेजा गया. वो बहुत ही कठिन ट्रेनिंग थी. अन्य लोगों की तरह हीं उसे भी "वोमिट कॉमेट" में चढ़ना पड़ा. उड़ते समय "उल्टी" न आए वहां इसकी ट्रेनिंग दी जाती थी.

उसने पानी की सतह के नीचे ट्रेनिंग ली जिससे वो "भारहीनता" के लिए खुद को तैयार कर पाए. 22 जनवरी 1992 को, उसकी मनोकामना पूरी हुई. 9 बजकर 52 मिनट 33 सेकंड पर उनकी स्पेस-शटल "डिस्कवरी" पृथ्वी से अन्तरिक्ष की ओर उठी.

डॉ. बोन्डर ने बाद में कहा, "उड़ान के समय उन्हें ऐसा लगा जैसे कोई उनके कंधे पकड़कर और हिलाकर उन्हें उठा रहा हो. वैसे वो उससे बिल्कुल डरी नहीं. वो बस वही काम कर रहीं थीं जिनके लिए उन्हें ट्रेन किया गया था. अगले आठ दिनों में स्पेस-शटल ने पृथ्वी की 192 बार परिक्रमा की. तब डॉ. बोन्डर ने अन्तरिक्ष से पृथ्वी के कई फोटो लिए.

स्पेस-शटल से जेम्स-बे का एक फोटो.

डॉ. बोन्डर स्पेस-शटल "डिस्कवरी" की लेबोरेटरी में प्रयोग करती हुई.

मिशन में एक "पे-लोड विशेषज्ञ" की हैसियत से उन्होंने "भार-हीनता" के मनुष्य शरीर पर प्रभाव को समझने के लिए कई प्रयोग किये.

स्पेस-शटल के सदस्यों ने डबलरोटी की बजाई चपटी चपाती (टोरटियास) खाए जिससे की शटल में डबलरोटी के छोटे-छोटे टुकड़े नहीं फैलें. वो धातु की बनी अल्मारियों में स्लीपिंग बैग में सोईं.

सभी स्पेस-शटल की यात्राओं जैसे वो मिशन भी खतरनाक पर उत्तेजक रहा. बाहर अन्तरिक्ष के गहरे अँधेरे में घूरते हुए डॉ. बोन्डर को अपनी पृथ्वी का महत्व गहराई से समझ में आया. "तब मुझे समझ में आया की पृथ्वी ही एकमात्र ऐसा गृह था जहाँ मानव जीवन पल-बढ़ सकता था." उन्होंने बाद में लिखा, "उस अनुभव ने मेरी ज़िन्दगी और जीवन के प्रति मेरे रवैये को बदला. मैं शायद बहुत खुशनसीब थी."

30 जनवरी को स्पेस-शटल पृथ्वी पर वापिस लौटी. डॉ. रोबर्टा बोन्डर पहली महिला कैनेडियन एस्ट्रोनॉट थीं जिन्होंने 8 दिन, 1 घंटा, 14 मिनट और 44 सेकंड अन्तरिक्ष में बिताए. "भार-हीनता" के कारण अन्तरिक्ष में उनकी उंचाई 5-सेंटीमीटर बढ़ गई थी. पर पृथ्वी पर लौटने के बाद उनकी उंचाई सामान्य हो गई. "उस उड़ान की सबसे आश्चर्यजनक घटना लैंडिंग थी," उन्होंने कहा. "क्यूंकि एक हफ्ते तक हमें अपने शरीर के भार का कुछ भान ही नहीं था, इसलिए पृथ्वी पर लौटने के बाद हम उठते समय बार-बार गिरे."

डॉ. रोबर्टा बोन्डर ने NASA में दस साल से ज्यादा काम किया. उसके बाद उन्होंने लेखन का काम शुरू किया. उन्होंने कई पुस्तकें लिखीं. कनाडा की 20 यूनिवर्सिटियों ने उन्हें मानक डॉक्टरेट की डिग्री से सम्मानित किया. उनके नाम पर कई स्कूलों के नाम रखे गए. उन्हें ऑफिसर ऑफ़ द आर्डेर ऑफ़ कनाडा के खिताब के साथ-साथ कैनेडियन मेडिकल हाल ऑफ़ फेम में भी शामिल किया गया.

2005 में वो ट्रेंट यूनिवर्सिटी, पीटरबरो, ओंटारियो की चांसलर बनीं. फोटोग्राफी उनका प्रमुख शौक है. "अगर मैं कुछ नया सीख नहीं रही हूँ, तो मुझे अच्छा नहीं लगता है," यह उस महिला के शब्द हैं जो अभी भी हर चीज़ को उसी उत्साह से करती हैं जैसे उन्होंने अन्तरिक्ष में अपनी पहली उड़ान के समय किया था.

फ्लोरिडा में डिस्कवरी स्पेस-शटल के सदस्यों का फोटो (1992)